**डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण**
एम.ए.,बी.एड.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

# संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु.सुषमा प्रफुल्ल नामे द्वारा प्रस्तुत **''गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना''** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

09.01.07

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 9 JAN 2007

**(डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण)**
**Head**
**Dept. of Hindi,**
**Shivaji University**
**Kolhapur-416004**

**डॉ.भरत धोंडीराम सगरे**
एम.ए.,बी.एड.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा।

# प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, कु.सुषमा प्रफुल्ल नामे ने मेरे शोध निर्देशन में **''गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना''** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल.(हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत किया है। यह कार्य पूर्व योजनानूसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध-कार्य के बार में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध निर्देशक

**(डॉ.बी.डी.सगरे)**

स्थान : सातारा।

तिथि : 9 JAN 2007

# प्रख्यापन

**''गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना''** लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो **एम्.फिल.(हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध छात्रा

**(कु.सुषमा प्रफुल्ल नामे)**

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 9 JAN 2007

# प्राक्कथन

# प्राक्कथन

**विषय की प्रेरणा -**

नाटक शुरू से ही मेरे अध्ययन और रूचि का विषय रहा है। कोई भी नाटक पढ़ने या देखने के बाद उसके कथ्य की ओर आलोचनात्मक दृष्टि से देखने की मुझे आदत है। इस रूचि के कारण मैं विभिन्न नाटककारों के नाटकों कों पढ़ती रही, जिसमें लक्ष्मीनारायण लाल, जयशंकर प्रसाद, गिरिराज किशोर आदि हैं। गिरिराज किशोर के नाटकों से मैं बहुत प्रभावित हुई। गिरिराज किशोर नवें दशक के एक सशक्त हिंदी नाटककार हैं। हिंदी नाट्य क्षेत्र के आंदोलन की परंपरा को जिन चूनीन्दा नाटककारों ने पुष्पित एवं पल्लवित किया है उनमें गिरिराज किशोर का नाम आग्रणी हैं। किशोर जी ने हिंदी नाट्य क्षेत्र में नये आयाम प्रस्तुत किए है। उनके नाटक रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से सफल बन पड़े है। समकालीन समाज, राजनीति, प्रशासन और आर्थिकता उनके नाटकों का प्रमुख विषय रहा है। जब मैंने गिरिराज किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोडा' और 'जुर्म आयद' नाटक पढ़े तब मैंने महसूस किया की समाज का यर्थात चित्रण करने वाले किशोरजी के नाटक सभी दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। जब मुझे एम्.फिल. के शोधकार्य के विषय चयन का अवसर मिला तो मैंने गिरिराज किशोर जी के नाटकों पर शोधकार्य करने का निश्चय किया। आदरणीय गुरूवर्य डॉ.बी.डी.सगरे सरजी से विचार विमर्श करने के पश्चात् **'गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना'** इस विषय का चयन किया।

**विषय का महत्व एवं उद्देश्य -**

गिरिराज किशोर समकालीन हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकार है। विशेषतः उनके नाटक रंगमंचीयता और अभीनेयता की दृष्टि से चर्चित है। किशोर जी ने अपने नाटकों में समाज, प्रशासन और व्यक्ति की विविध समस्याओं का चित्रण कर उनके समाधान का प्रयास भी किया है। समाज के कटू यथार्थ की ओर उन्मुख होना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। आधुनिक जीवन और जगत की सही और स्पष्ट आलोचना ही उनके नाटकों की मूल भित्ति है। नारी शोषण और

आधुनिक नारी के अधिकारों के प्रति सजगता को राज किशोर जी ने अपने नाटकों में चित्रित किया है। किशोर जी के नाटक व्यक्ति और समाज के लिए प्रेरणा देनेवाले नाटक हैं क्योंकि इन नाटकों में दूषित समाज व्यवस्था और अपराधि प्रशासन को यथार्थ रूप में समाज के सामने लाने का प्रयास है। सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों और अंतर्विरोधों की अभिव्यक्ति इनके नाटकों में हुई है। समय के बृहत्तर परिदृश्य को समेटने की क्षमता होने के कारण गिरिराज किशोर जी के नाटक पाठकीय चेतना को निरंतर उत्तेजित करते है। अपने लेखन के विषय में गिरिराज जी कहते हैं 'अगर मेरे देश समाज और मेरे लोगों की तकलीफ और उनका संघर्ष मेरी रचनाओं में उतरा है तो सौ साल बाद भी उसकी लहर लोगों को छूएगी। इस प्रकार रचना के केंद्र में समाज को देखनेवाले गिरिराज किशोर जी के नाटकों पर समाज को लेकर शोधकार्य नहीं हुए है। अतः इस अभाव की पूर्ति करना मेरे शोध प्रबंध का उद्देश्य है।

**गिरिराज किशोर के नाटकों पर संपन शोधकार्य -**

1. राजेंद्र पवार : गिरिराज किशोर का नाट्यशिल्प - कोल्हापुर, 1997

**अनुसंधान के प्रारंभ में उत्पन्न प्रश्न -**

गिरिराज किशोर जी के नाटकों का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उपस्थित हुए -

1. क्या, गिरिराज किशोर जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है?
2. किशोर जी के नाटकों का वस्तुगत विवेचन कैसा हुआ है ?
3. किशोर जी के नाटकों में समाज जीवन कैसा है?
4. समाज के किन-किन समस्याओं का चित्रण किशोर जी ने अपने नाटकों में किया है?
5. किशोर जी के नाटकों में सामाजिक चेतना कैसी है?

अध्ययन के उपरांत इन प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है।

**प्रथम अध्याय : 'गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व एवं रचनासंसार'**

किसी भी साहित्य कृति के साम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक होता है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशोर का जन्म, बचपन, माता-पिता, परिवार, दादाजी, शिक्षा-दिक्षा, नौकरी, विवाह, दांपत्य जीवन तथा गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व की विशेषताओं का विवेचन किया है। विशेषताओं में बुध्दिमानी, गहन अध्येता, गांधीवादी, आध्यात्मवादी, निस्वार्थी आदि विशेषताओं का विवेचन किया है। तथा इसी अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशोर के रचना संसार का परिचय दिया है। एक सफल रचनाकार के रूप में किशोर को चित्रित किया गया है।

**द्वितीय अध्याय : 'गिरिराज किशोर के नाटकों का सामान्य परिचय'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत कथावस्तु का अर्थ, परिभाषा को सैध्दांतिक रूप में स्पष्ट किया है। 'नरमेध', 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे', 'केवल मेरा नाम लो', 'जुर्म आयद' आदि नाटकों का परिचय देते हुए उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**तृतीय अध्याय : 'गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समाज-जीवन'**

इस अध्याय के अंतर्गत समाज जीवन की सामान्य अर्थ-परिभाषा, साहित्य और समाज जीवन का विवेचन किया है। साथ ही सामाजिक मूल्यों में परिवार, दांपत्य जीवन, रिस्ते-नाते, नारी जीवन के साथ भ्रष्ट राजनीति, जाति का प्रभाव, रूढी परंपराएँ आदि का विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**चतुर्थ अध्याय : 'गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत समाज से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इन समस्याओं में प्रमुखतः पारिवारिक, नारीसमस्या, भ्रष्टाचार, सदोष विधि व्यवस्था, आर्थिक और धार्मिक समस्याओं का समग्र रूप से विवेचन किया है और अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए है।

**पंचम अध्याय : 'गिरिराज किशोर के नाटकों में सामाजिक चेतना'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत चेतना का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप का विवेचन किया गया है। साथ ही, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक चेतनाओं को गिरिराज किशोर के नाटकों में कहाँतक सफलता प्राप्त हुई है इसका यथार्थ विवेचन इस अध्याय में किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए है।

**उपसंहार -**

सभी अध्यायों का सार या निष्कर्ष को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

# ऋणनिर्देश

जीवन में कुछ ऋण ऐसे होते है, जिनसे मुक्त होना संभव नहीं होता। इसी तरह का ऋण मुझ पर मेरे गुरूवर्य डॉ.बी.डी.सगरे सर जी की कृपा का है। उनके आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफल प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध है। प्रस्तुत प्रबंध उनके आशीर्वाद एवं कृपापुर्ण सक्षम निर्देशन में लिखा गया है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। सातत्यपुर्ण व्यस्तता के बावजुद मुझे निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देते रहे है। आपकी सहृदयता को आभार के चंद शब्दों में मैं बाँधना नहीं चाहती। आपकी इस कृपा का एहसास मुझे जीवन में हमेशा रहेगा। आपके इसी प्रेरणा, स्नेह और आशीर्वाद की मैं सदैव अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय गुरूवर्य हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ.अर्जुन चव्हाण सर की मैं सदा ऋणी रहूँगी। जिन्होंने हर समय हमें सहयोग दिया। साथ ही आदरणीय गुरूवर्य डॉ.पांडुरंग पाटिल सर जी की मैं ऋणी रहूँगी उनका मुझे सदा ही प्रेरणा एवं आशीर्वाद मिलता रहा है। साथ ही डॉ.पद्मा पाटिल मॅडम, डॉ.अंतरेड्डी मॅडम, निंबाळकर मॅडम के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। वे हमेशा से मेरे शुभचिंतक रहें। मेरे शोधकार्य में सहायता करनेवाले डॉ.रवी पाटिल, डॉ.युनुस शेख, डॉ.सुषमा लोखंडे, राजेंद्र बाबर, बाळू खर्डेसर के प्रति धन्यवाद प्रस्तुत करती हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पुरा करने का सारा श्रेय मैं अपने माता-पिता को देती हूँ। मेरे भाई सचिन और बहन पल्लवी और परिवारवालों से मुझे सदा ही प्रेरणा मिलती रही है। मेरे शुभचिंतक और सहयोगी विठ्ठल नाईक की मैं सदा ऋणी रहूँगी जिन्होंने इस शोधकार्य में मुझे बहुत सहाय्यता की है।

मित्र परिवार में दिपक, प्रकाश, वालचंद, प्रविण, अमोल, पतंगेसर, रूपाली, शैलजा, छाया, रिना, मिनाक्षी, वैशाली, स्मिता, निता, कांता, संगिता, नागिन, माधुरी, शीला, प्रिति प्रगति,सुवर्णा, वंदना, सुनिता, क्रांती इन सब का मैं आभार मानती हूँ। महावीर महाविद्यालय के श्री सचिन सर का मैं आभार मानती हुँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मेरी मदद की। शोध-ग्रंथ के रूप में टंकलेखक श्री मिलिंद भोसले जी की मैं आभारी हुँ।

जिन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों ने मेरे इस लघु-शोध प्रबंध के कार्य में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मदद की उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हुँ। मैं इस लघु-शोध प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हुँ।

**कु.सुषमा प्रफुल्ल नामे**
(शोध छात्रा)

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 9 JAN 2007

# अनुक्रमणिका


पृष्ठ संख्या

**प्रथम अध्याय -गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व एवं रचनासंसार** (1 -29)

**1.1 व्यक्तित्व**

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 माता-पिता

1.1.4 परिवार

1.1.5 दादाजी

1.1.6 शिक्षा-दिक्षा

1.1.7 नौकरी

1.1.8 विवाह

1.1.9 दांपत्य जीवन

**1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ**

1.2.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व

1.2.2 बुद्धिमानी गिरिराज किशोर

1.2.3 गहन अध्येता गिरिराज किशोर

1.2.4 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित गिरिराज किशोर

1.2.5 साहित्य लेखन में रुचि रखनेवाले गिरिराज

1.2.6 गांधीवादी गिरिराज किशोर

1.2.7 ईश्वरवादी गिरिराज किशोर

1.2.8 संकटमोचन गिरिराज किशोर

1.2.9 आम आदमी के रचनाकार गिरिराज किशोर

1.2.10 निस्वार्थी गिरिराज किशोर

**1.3. रचना संसार**

1.3.1 उपन्यास

1.3.2 कहानी

1.3.3 नाटक

1.3.4 एकांकी

1.3.5 आलोचना

1.3.6 बाल साहित्य

1.3.7 स्वदेशी एवं विदेशी भाषाओं में अनूदित साहित्य

1.3.8 साक्षात्कार

1.3.9 विविध रचनाओं पर सम्मान एवं पुरस्कार

1.3.10 विदेशी यात्राएँ

1.3.11 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग एवं सदस्य

**निष्कर्ष**

**द्वितीयअध्याय - 'गिरिराज किशोर के नाटकों का सामान्य परिचय' (30- 78)**

**2.1 कथावस्तु का अर्थ एवं परिभाषा।**

**2.2 गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटक।**

**2.3 गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय**

2.3.1 नरमेध

2.3.2 प्रजा ही रहने दो

2.3.3 घास और घोड़ा

2.3.4 चेहरे-चेहरे किसके चेहरे

2.3.5 केवल मेरा नाम लो

2.3.6 जुर्म आयद

**तृतीय अध्याय - 'गिरिराज किशोर के नाटकों में समाज-जीवन'** **(79 -133)**


**3.1 समाज : अर्थ एवं परिभाषा**

**3.2 जीवन : अर्थ एवं परिभाषा**

**3.3 साहित्य और समाज जीवन**

**3.4 पारिवारिक जीवन**

3.4.1 दांपत्य जीवन

3.4.2 माता-पिता और संतान

3.4.3 भाई-बहन

3.4.4 माँ-बेटी

3.4.5 पिता-पुत्र

**3.5 नारी जीवन**

3.5.1 नारी की द्वंद्वात्मक स्थिति

3.5.2 नारी जीवन की असहायता

3.5.3 पति के अत्याचार सहनेवाली नारी

3.5.4 यौन संबंध से पीड़ित नारी

3.5.5 प्रेम में असफल नारी

3.5.6 विद्रोही नारी

3.5.7 नारी में प्रतिशोध की भावना

**3.6 आम आदमी का जीवन**

**3.7 सत्ता की लालसा**

**3.8 भ्रष्ट राजनीति**

**3.9 भ्रष्टाचार**

**3.10 ईश्वर पर विश्वास**

**3.11 जाति का प्रभाव**

**3.12 रूढी-परंपराएँ**

**निष्कर्ष**

**चतुर्थ अध्याय - 'गिरिराज किशोर के नाटकों में सामाजिक समस्या'** **(134-161)**

**4.1 समस्या शब्द का अर्थ**

**4.2 समस्या शब्द की परिभाषा**

**4.3 समस्या का स्वरूप**

**4.4 सामाजिक समस्या**

4.4.1 पारिवारिक विघटन

4.4.2 दांपत्य जीवन की समस्या

4.4.3 नारी शोषण की समस्या

4.4.4 अवैध यौन संबंध की समस्या

4.4.5 प्रेम की समस्या

4.4.6 आत्महत्या की समस्या

4.4.7 आम आदमी के शोषण की समस्या

**4.5 राजनीतिक समस्या**

4.5.1 सत्ता की समस्या

4.5.2 भ्रष्टाचार की समस्या

4.5.3 सदोष विधि व्यवस्था

4.5.4 पुलिस की समस्या

**4.6 आर्थिक समस्या**

**4.7 धार्मिक समस्या**

**निष्कर्ष**

**पंचम अध्याय - 'गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना'** **(162-181)**

**5.1 चेतना शब्द का अर्थ**

**5.2 चेतना की परिभाषा**

**5.3 चेतना का स्वरूप**

**5.4 सामाजिक चेतना**

**5.5 पारिवारिक चेतना**

5.6 दांपत्य चेतना

5.7 नारी चेतना

5.8 भ्रष्टाचार का विरोध

5.9 जातीय संघर्ष

5.10 आर्थिक चेतना

5.11 राजनीतिक चेतना

निष्कर्ष

उपसंहार (182-187)

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची (188-196)